संपादक के नोट।

मैं मेरे प्रभु और उद्धारकरता येशु मसीह के नाम से आप सबका अभिवादन करती हूँ। अक्तूबर धरती के फ़सल का महिना है। मैं प्रार्थना करती हूँ कि तुम एक भरपूर फ़सल को इस वर्ष प्राप्त करो। इसलिए बोने और काटने के लिए तुम्हे प्रभु के संग बंधे रहना हैं ताकि तुम आशिषित हो जाओ। प्रभु के मदद के बिना अगर हम बोएँगे तो हम कोई लाभ नहीं प्राप्त करेंगे, इस तरह हम एक आशिषित फ़सल नहीं पाएँगे। जब मनुष्य और परमेश्वर एकता में होते हैं तब हम प्राणों की एक भरपूर फ़सल पाएँगे, ताकि प्राण बच सकें। मनुष्य का काम है ज़मीन पर हल चलाना और उसे तैयार करना बीज बोने के लिए।

होशे १०:१२ – अपने लिए धार्मिकता बोओ और करूणा की कटनी काटो। अपनी पड़ती भूमि को जोतो, क्योंकि समय आ गया है कि तुम यहोवा के खोजी बनो जिस से वह आकर तुम पर धार्मिकता की वर्षा करे। प्रभु वर्षा को भेजेगा और बीज को बढ़ोती देगा।

मनुष्य का अगला काम है जंगली घास को निकालना और फ़सल की रक्षा करना। क्योंकि जब फ़सल तैयार है, हमारा प्रभु बसन्त–कालीन वर्षा भेजेगा। धरती तीस गुना, साट गुना या सौ गुना फलों का उपज देगा। इसलिए कि प्रभु तुम्हारे साथ बोने और कटनी के समय था, वह पहली वर्षा भेजता है बोने के लिए और बसन्त–कालीन वर्षा कटनी के लिए। योएल २:२३ – हे सिय्योन के लोगो, आनन्द मनाओ। अपने परमेश्वर यहोवा में मग्न हो, क्योंकि तुम्हें स्वीकार करने के प्रमाण स्वरूप उसने पहली बरसात दी है, पूर्वकाल के समान उसने वर्षा अर्थात पहली और पिछली बरसात भजी है।

प्रेरितों के समय उन्होंने बीज बोया (वचन)। और वें बाहर गए और सारे जहाँ में प्रचार करने लगे, प्रभु ने बसन्त–कालीन वर्षा (पवित्र–आत्मा) भेजा। प्रभु की आत्मा उनके द्वारा कार्य कर रहा था और वचन को उन चिन्हों के द्वारा जो साथ साथ होते थे, दृढ़ करता रहा।

उन्होंने प्रभु के लिए हर घुटना को टिकाया और हर जुबान से कहलाया कि येशु ही प्रभु है। आरंभ में, प्रेरितों ने परमेश्वर के वचन को आसुँओं से बोया, प्रार्थनाओं से और उनके सामर्थ और आत्मा से। उन्होंने प्रभु के लिए सब कुछ बोया और अंत में उसके लिए शहीद हुए।

उनका बहुतायत फ़सल यह था कि पूरा एशिया प्रभु को जानने लगा। इसलिए वें जहाँ भी गए अन्य–जाति के लोग जानने लगे कि प्रभु उनके साथ है और अद्‌भुत कार्यों को कर रहा है। इसलिए उन्होंने उनसे कहा, जिन्होंने दुनिया को उलट–पुलट कर दिया वें यहाँ भी आए हैं।

जब पतरस परमेश्वर के वचन का प्रचार कर रहा था, पवित्र–आत्मा सुननेवालों पर आया। प्रेरितों के काम १०:४४–४६ – जब पतरस यह वचन कह ही रहा था, तभी वचन के सब सुननेवालों पर पवित्र आत्मा उतर आया। और जितने ख़तना किए हुए विश्वासी पतरस के साथ आए हुए थे, सब विस्मित हुए कि पवित्र आत्मा का दान ग़ैरयहूदियों पर भी उंडेला गया है। क्योंकि वे उन्हें भिन्न–भिन्न भाषाएं बोलते और परमेश्वर की बड़ाई करते हुए सुन रहे थे।

जब पौलुस ने हाथ रखकर लोगों के लिए प्रार्थना किया उन्होंने पवित्र–आत्मा पाया और वें अन्य–भाषाएं बोलने लगे। प्रभु ने उनपर बसन्त–कालीन वर्षा उण्ढ़ेला।

आज हम इतिहास के अंत तक आएं हैं। प्रभु का आगमन निकट है। हमारे आगे एक महान फ़सल है। खेत अनाज से सुन्हैरे हैं। हाँ, बसन्त–कालीन वर्षा के दिन निकट हैं। प्रकाशितवाक्य २२:११–१२ – जो अन्याय करता है, वह अन्याय ही करता रहे। जो अशुद्ध है, वह अशुद्ध ही बना रहे। जो धर्मी है, वह धर्म के कार्य ही करता रहे। जो पवित्र है, वह पवित्र ही बना रहे। देख, मैं शीघ्र आने वाला हूं। प्रत्येक मनुष्य को उस के कामों के अनुसार देने को प्रतिफल मेरे पास है।

प्रार्थना करना हमारा काम हैं, बसन्त–कालीन वर्षा भेजना प्रभु का कार्य है।

नबी ज़कर्याह कहता है ज़कर्याह १०:१ में – बसन्त–कालीन वर्षा के समय यहोवा से वर्षा मांगो – हां उस यहोवा से जो वर्षा के बादल बनाता है। तब वह प्रत्येक मनुष्य को वर्षा की बौछार तथा खेतों में हरियाली देगा।

मसीह में मेरे प्रियों, प्रभु पर विश्वास करो और प्रार्थना करो, अपने सार्मथ और बुद्धि पर निरभर न रहो।

प्रभु के सार्मथ में एक हो जाओ। ज़कर्याह ४:६ – फिर उसने मुझ से कहा, ‘जरूब्बाबेल के लिए यहोवा का वचन यह है: "न बल से न शक्ति से, परन्तु मेरे आत्मा के द्वारा,’ सेनाओं का यहोवा यही कहता है।

पवित्र–आत्मा १ कुरिन्थियो ३:६–७ में कहता है – मैंने बोया, अपुल्लोस ने सींचा, परन्तु परमेश्वर ने बढ़ाया। अतः न तो बोने वाला कुछ है, और न ही सींचने वाला, परन्तु बढ़ानेवाला परमेश्वर ही सब कुछ है।
तो फिर यह न हीं एक की जो चाता हो, और न ही उसके जो दौड़ता हो, लेकिन परमेश्वर की, जो दया दिखाता है। क्योकि परमेश्वर के लिए कुछ भी असंभव नहीं है।
तो फिर प्रिय जनों, परमेश्वर पर निर्भर रहो। इस दुनिया के अंत में एक महान फसल होगा। जो लोग फसल काटेंगे वें परमेश्वर के स्वर्गदूत होंगे। मत्ती ३:१२ – उसका सूप उसके हाथ में है। वह अपना खलिहान पूर्णतः साफ करेगा, और अपना गेहूं भण्डार में इकट्ठा करेगा, परन्तु भूसी को उस आग में जलाएगा जो बुझने की नहीं।"

इसलिए प्रभु में आननदित हो। फ़सल के लिए लोगों को भेजने के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करो। प्रभु, स्वर्गीय दरवाजे को खोलता है, अनुग्रह, दया, पवित्र आत्मा और शक्ति प्राप्त कराने के लिए। इसलिए हमारे प्रभु से मिलने के लिए तैयार हो जाओ जब वह अपने संतों की भीड़ के साथ आएगा। भला प्रभु तुम्हें आशीष दे और तुम्हें महान फ़सल के लिए तैयार करे।

पास्टर सरोजा म.

क्या हम फलदायक हैं।

येशु ने कहा – मैं दाखलता हूँ, तुम डालियाँ हो। जो मुझ में बना रहता है और मैं उसमें, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग हो कर तुम कुछ भी नहीं कर सकते। यूहन्ना १५:५ हाँ, कितना सत्य है यह वचन। कुछ समय पहले, मैंने दो मित्रों के बारे में एक सुंदर कहानी पढ़ा जिसमें वें कुछ मकई के बीजों को आजू–बाजू में बिखरे देखा। उन्होंने निर्णय किया कि वें कुछ बीज घर ले जाएँगे और अपने–अपने बगीचों में बोएँगे। जब कि पहले लड़के ने देखा कि बीज ज़मीन में से अंकुरित नहीं हो रहे हैं, दो दिनों के बाद उसने मिट्टी को खोदा और बीज को फिर बोया। उसने यह कुछ दिनों के लिए किया। यह करते समय उसने छोटे जड़ों और लताओं को नाश किया इस प्रकार उसे बार–बार उखाड़ने में बीज मर गए। दूसरे लड़के ने बीज बोया और सिर्फ़ सपना देखा कि एक सुंदर जड़ उस बीज में से उग आए। उसने बारीश को उस पर पानी बरसने दिया, सूरज को उजाला देने और मिट्टी को उसे पोषण देने दिया। कुछ दिनों बाद, उसने देखा कि एक छोटी कोंपल उग आई उस ठोस भूमि से कोमल पत्तियों के साथ। उसके आनंद की कोई सीमा नहीं थी। कितने बार हम एक सुंदर सपना का बीज बोते हैं हमारे मनों के उपजाऊ मिट्टी में और फिर उसे खोद निकालते हैं ? हम क्या पा सकते थे अगर हमने उस बीज को बढ़ने दिया हमारी आतमिक आँखों से फ़सल पर ध्यान लगाते हुए? इसी तरह से हमारी हर इच्छा – बड़ा या छोटा, आरंभ करता है हमारे ह्रदय और मन में बीज बोने से, बीज हमे प्रोत्साहित करता है विश्वास करने के लिए कि हमने जिसमें विश्वास किया हैं वह पूरा होगा। इसे केवल हमारी प्रतिबद्धता की ज़रूरत है, विश्वास, भरोसा करने के लिए कि वह बारीश, तूफ़ान और जीवन का सूर्य–किरण द्वारा काम करेगा। यह महत्तवपूर्ण सच्चाई है कि वह दाखलता है और हम ड़ालियाँ हैं और हमे उसमें बनके रहना हैं फलवंत बनने के लिए। अगर हम दाखलता से अलग हो जाएँगे हम कुछ नहीं कर सकते, हमारा जीवन बंजर हो जाएगा और एक बड़ा कचरा। परमेश्वर के संग बनके रहने में, हम उसमें जुड़े रहना हैं, यह हमारे आतमिक जीवन का ज़रूरी भाग है। हम हमारी ओर से जीवन में कुछ भी बड़ा हासिल नहीं कर सकते हैं। हम बहुत बार सोचते हैं कि हम परिपक्व हैं हम में काफ़ी बुद्धि और ज्ञान है अपने आप से करने के लिए।

कदापि नहीं। हमे दाखलता से हमेशा जुड़े रहना चाहिए। "अगर एक मनुष्य मुझ में रहता है और मैं उसमें।" दाखलता में बने रहना सिय्योन में उसके संग रहना हैं, उसने जो राज्य बनाया है हमारे लिए, वहाँ पहुँचने के लिए हमे अपना शरीर और आत्मा तैयार करना हैं। हम पढ़े २ कुरिन्थियों ७:१ – अतः हे प्रियो, जब कि हमें ये प्रतिज्ञाएं प्राप्त हैं तो आओ, परमेश्वर के भय में पवित्रता को सिद्ध करते हुए, हम देह और आत्मा की सब अशुदेधता से अपने आप को शुद्ध करें। राजा के सामने जाने से पहले हमे सारे अशुद्ध चीज़ों से धुलना हैं और पाप से जो हमारी देह और आत्मा में है। हमारा प्रभु हमसे प्यार करता है और हमे चुनता हैं उसके साथ ले जाने के लिए। वह हमे एक ताज देगा जो यह संसार नहीं दे सकता हैं। जब हम उसके सम्मुख जाते हैं हमे पूरा प्यार से आना हैं बिना किसी अशुद्धता के साथ हमारे देह और आत्मा में। यह उसे आनंदित करता हैं और ऐस्तेर कोताज दिया उसी तरह से वह हमे भी ताज देगा। पवित्र–शास्त्र कहता है, प्रेरितों के काम २२:१६ – "अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल।" हम अपने पापों को छोड़ सकते हैं, दुष्ट और पापी विचारों को पानी में, प्रभु के नाम से पानी में बपतिस्मा लेकर। हम उसके नाम से शुद्ध हो सकते हैं। उसके प्यारे बनने के लिए और यह कि प्रभु हमे मुकुट दे, हमे हमारे जीवनों में शद्ध होना हैं और प्रभु के पास आना हैं। उसी प्रकार जैसे एस्तेर ने अपने आप को शुद्ध किया राजा के सामने आने के लिए और एहसान पाया और ताज पाया। पवित्र शास्त्र कहता १ पतरस ३:२१– यह पूर्व संकेत बपतिस्मा का है, जिसका अर्थ शरीर की गन्दगी दूर करना नहीं, परन्तु शुद्ध विवेक से परमेश्वर के अधीन होना है। अब तो बपतिस्मा तुम्हें येशु मसीह के पुनरूत्थान द्वारा बचाता है। जब हम पानी में बपतिस्मा लेते हैं, तब हम प्रभु के साथ एक समझौता करते हैं। जब हमारे जीवन को प्रभु को देते हैं वह हमे शुद्ध करेगा उसके लहु से और उसका प्यार हम पर आता हैं। हर दिन हम स्नान करते हैं और हम अपने कपड़ों को बदलते हैं, अपने–आप को शुद्ध रखने के लिए और बदबू छूड़ाने के लिए और बदबू से छुड़ाने के लिए। इसलिए हमारा परमेश्वर हमसे जो प्यार करता है यह भी चाहता है कि हमारे प्राण और देह शुद्ध हो। वह इच्छा करता है हमारे देहों और हमारे जीवनों में रहने के लिए जैसे आज वह कार्य करता है हमारे जीवन में उसके आत्मा के द्वारा। जब प्रभु इस संसार में था वह अलग शहरों में गया और उसने सुसमाचार का प्रचार किया। आज वही कार्य पवित्र आत्मा द्वारा किया जाता

है। हम प्रभु को देख नहीं पाते लेकिन उसके कार्यों के द्वारा उसे जान सकते हैं। हम जानते हैं कि उसकी करूणा हमपर हैं, उसकी ओर से चंगाई के द्वारा हम जानते हैं कि हमारा उद्धारकर्ता हमारे साथ है। इसलिए हर कार्य में प्रभु हमसे बात करता है इसलिए हमे हमारी आत्मा, प्राण और देह को उसके नज़र में शुद्ध रखना हैं। इसका केवल एक मार्ग है, येशु मसीह का लहु, और यह कि उसपर विश्वास करें। एक ही तरीका है, सारे अधर्म के कार्यों को पानी में छोड़कर उसके साथ एक होना है, और उसके नाम से विजयी होना है। हमे वह न दिखने वाला मुकुट देने के लिए जो यह संसार नहीं देख सकता, प्रभु ने काटों का ताज क्रूस पर पहना। उसने स्वेच्छा से ताज अपनाया क्रूस पर ताकि वह हमे महिमा का ताज दे सके। वह चाहता है हमे वह सब आशीष मिले। इसलिए हमे अपनी आत्मा, प्राण और देह पूर्ण शुद्ध रखना हैं जब हम प्रभु के पास आते हैं। बुराई न देखके न बोलके और न सुनके, हमारी आत्मा प्राण और देह शुद्ध किए जा सकते हैं। भजन संहिता ४५:१३–१५ – महल में राजकुमारी अति शोभायमान है; उसके वस्त्रों में सोने के बेल–बूटे कढ़े हैं। बेल–बूटेदार वस्त्रों से सुसज्जित वह राजा के पास पहुंचाई जाएगी; जो कुँवारी सहेलियां उसके पीछे पीछे चलती हैं, वे तेरे पास पहुंचाई जाएगी। आनन्द और हर्ष के साथ उन्हें पहुंचाया जाएगा वे राजा के महल में प्रवेश करेंगी। जब राजाओं का राजा महिमा का ताज देगा तब बहुत आनंद और खुशी होगी। जब वह हमे अपनाता है तब इतना आनंद और खुशी और आशीष हमारे घरों में होगा। दूसरा मुकुट जो प्रभु हमे देता है, वह है बुद्धि का मुकुट। कुछ लोगों को प्रभु बुद्धि ऐसे रीति से देता है कि वह उनके जीवनों को एक ताज समान बनाता। हम पढ़ते हैं नीतिवचन ४:७–९ – बुद्धि का आरम्भ तो यह है: बुद्धि प्राप्त कर, जो कुछ भी तू प्राप्त करे, समझ को अवश्य प्राप्त कर। उसे श्रेष्ठ जान, और वह तुझे उन्नत करेगी। यदि तू उसे गले लगाए, तो वह तेरा सम्मान बढ़ाएगी। वह तेरे सिर पर अनुग्रह का ताज रखेगी, वह तुझे सुन्दरता का मुकुट पहनाएगी। बुद्धी एक वरदान है जो प्रभु हमें हमारे जीवनों में देता है। अगर हम एक किलो गेहुँ बोते हैं तो हम एक गोनी गेहुँ छः महिने बाद काट सकते हैं, अगर हम टैपिओका के चार डालियाँ लगाते हैं तो छः महिने बाद हम एक गोनी टैपिओका इकट्ठा कर सकते हैं। इसी प्रकार अय्युब भी एक खेत के खोज में था जहाँ पर बुद्धि को बहुगुना किया जा सकता था। हम पढ़ते हैं अय्यूब २८:१२– परन्तु बुद्धि कहां मिल सकती है? और समझ का स्थान कहां है? अय्युब एक खेत के तलाश में था जहाँ पर बुद्धि और ग्यान मिलता हो। ऐसा खेत यह पृथ्वी पर न मिल सका।

प्रेरित पौलुस कहता है कुलुस्सियों २:३ में कि वह खेत येशु है – उसमें बुद्धि और ज्ञान के समस्त भण्डार छिपे हुए हैं। इस संसार में हम बुद्धि और ग्यान नहीं पा सकते हैं लेकिन हमारे प्रभु में बुद्धि और ग्यान के खज़ाने छिपे हुए हैं। वह हमे बुद्धि और ग्यान का मुकुट दे सकता है। प्रभु हमे उसके खज़ाने का घर देने के बाद हमे घटी नहीं होगी, इसलिए बुद्धि का यह ताज पाने के लिए हमे अपने आप को तैयार करना हैं जैसे एस्तेर ने राजा के सामने आने के लिए तैयार किया। प्रभु के पास सब कुछ है और वह आया देने के लिए और उसने हमारे जीवनों में दिया है। जब समय आया उसका क्रूस पर जीवन देने का वह हमे छोड़कर नहीं गया। उसने उसके प्यार को हमारे लिए क्रूस पर पूरा किया। उसके पास ऐसा बुद्धि और ग्यान है, जब हम उसे पाते हैं तब यह आशीष हमारे जीवन में पाते हैं। बुद्धि और ग्यान खज़ाने के रूप में येशु मसीह में छिपे हैं अगर इसकी घटी हमारे जीवन में हैं तो हमे प्रभु येशु मसीह के पास जाना हैं। प्रभु हमें ऐसा आशीष और मुकुट देगा जो यह संसार नहीं देख सकता है लेकिन हम समझ सकते हैं कि प्रभु हम पर दयालु है। सुलैमान ने प्रभु से बुद्धि माँगा और प्रभु ने उसे दिया। पवित्र शास्त्र कहता है नीतिवचन १:७ – यहोवा का भय मानना बुद्धि का प्रारम्भ है मूर्ख ही बुद्धि तथा शिक्षा को तुच्छ समझते हैं। यह ताज पाने के लिए हमे प्रभु का भय मानना है। फ़िरौन और उसकी सेना ने इस्राएलियों को भगाया उन्हे नाश करने के लिए। प्रभु ने इस्राएलियों पर दया किया और वें उनके लिए उसके प्यार को देख पाए। प्रभु ने फ़िरौन और उसके घोड़ों को लाल–समुद्र में डुबा दिया। इसलिए जब हम प्रभु का भय मानते हैं तब हम इस महिमा भरे ताज को हमारे जीवनों में पहचान सकते हैं। वह हमें ऐसी बुद्धि देगा जो यह संसार नहीं दे सकता। यह पाने के लिए हमें प्रभु का भय मानना है। राजा के पास जाने से पहले हमे भय मानना है और अपने आप को तैयार करना हैं। हमे अपने आप को शुद्ध करना है ताकि राजा हमे स्वीकार करें। जैसे एस्तेर और उन कुवाँरियों ने अपने आप को तैयार किया और राजा के उपस्थिति में गए उसी तरह से हमे प्रभु के पास जाना हैं भय में हमारी आत्मा, प्राण और शरीर को पूर्ण रख कर। तब वह हमे स्वीकार करेगा, महिमा का मुकुट देगा और हमे बुद्धि का मुकुट देगा। तब हम जानेंगे कि उसकी दया, उसका प्यार और उसका उद्धार हमारे साथ हैं और हम अनुभव कर सकते हैं उसके कार्यों को। आज भी हम हमारे जीवनो में कह नहीं सकते कि हमारे जीवनों में हम सब बुद्धिमान लोग हैं। प्रभु ने मनुष्य को अपने ही रूप में बनाया, स्वर्गदूतों से थोड़ा नीचे बनाया और अदन के वाटिका में रखा। पाप करने के कारण वे

सब कुछ खो गए। एक और बार हमे बुद्धि का मुकुट देने के लिए उसने अपने–आप पर काटों का ताज लिया। पवित्र शास्त्र कहता है याकूब १:५ – यदि तुम में से किसी को बुद्धि की कमी हो तो वह परमेश्वर से मांगे और उसे दी जाएगी, क्योंकि वह प्रत्येक को बिना उलाहना दिए उदारता से देता है। अगर हमे बुद्धि की घटी हैं, अगर हम उससे दूर हैं, उसके प्यार को हमारे जीवनों में नहीं पाया है तो आज भी हमे प्रभु से बुद्धि माँगना है। हर एक को बहुतायत रिति से देने के लिए उसने उसपर काटों का ताज लिया। इसलिए प्रभु हमे यह बुद्धि का ताज देता है। हम पढ़ते हैं व्यवस्थाविवरण ४:५–६ में मूसा क्या कहता है – देखो, मैंने अपने परमेश्वर यहोवा के आज्ञा के अनुसार तुम्हें विधियां और नियम सिखाए हैं कि तुम उनका उस देश में पालन कर सको जिसको तुम अपने अधिकार में करने के लिए उसमें प्रवेश करने वाले हो। अतः तुम उनको मानो और उनका पालन करो, इस से तुम्हारी बुद्धिमानी तथा समझदारी जाति जाति के सब लोगों के सामने प्रकट होगी और वे इन विधियों को सुनकर कहेंगे, 'निस्सन्देह इस महान जाति के लोग बुद्धिमान और समझदार हैं।" अगर इसाएलियों ने आज्ञा मानी होती और सारे आज्ञाओं का पालन किया होता जो मूसा ने दिया तो वें इस पृथ्वी पर सबसे बुद्धिमान लोग होते। प्रभु चाहता है कि हम इस संसार के लोगों से ज़्यादा जागृत और बुद्धिमान होना है। यह उसकी इच्छा है। यही कारण है कि वह हम से बात करता है उसके वचन से हमे सम्मती देते हुए, राह और ताड़ना देते हुए। वह ऐसा कहता है ताकि हमारे जीवनों में कुछ भी घटी न हो। यही कारण है कि वह हमे हर समय सिखाते रहता है। एक घर में अगर एक बच्चा कमज़ोर है पढ़ाई में माता–पिता और अधिक ध्यान देंगे उसे पढ़ने में मदद करने में यह इच्छा रखते हुए कि वह भी दूसरे बच्चों संग उत्तीरण हो जाए नहीं तो उसका एक वर्ष बरबाद हो जाएगा। इसी प्रकार प्रभु हमे बार–बार सिखाता है ताकि हम बुद्धिमान और आशिषित हो ताकि हम संसार में सिर बनकर रहे। वह इच्छा करता है कि हम बुद्धि के लोग बने और समझ के। यह युसुफ़ के जीवन में साबित हुआ है और पवित्र शास्त्र में लिखा गया है उत्पत्ति ४१:३३ – अब फ़िरौन किसी समझदार और बुद्धिमान व्यक्ति को ढूंढ़ कर मिस्र देश का अधिकारी नियुक्त करे।

परमेश्वर चाहता है कि वह हम सबको उसका अभिषेक दें। जिन्होने अभिषेक पाया है उन्हे हमेशा अभिषेक में रहना है। मेरे जीवन में मैं भी इस कलिसियां में आशीष पाने के लिए आई थी, चंगाई और शांति के लिए मेरे जीवन में। मेरे पड़ोसियों ने मुझे इस जगह में आमंत्रित किया। वचन सुनकर और वचन

के अनुसार जीकर, प्रभु ने मुझे महिमा का मुकुट दिया, बुद्धि का मुकुट और अभिषेक दिया। अभिषेक का मुकुट पाने के बाद प्रभु ने मुझे पूछ के रूप से उठाकर सर के रूप में बनाया। इसलिए अब हमे अभिषेक से एक होना हैं। हमे अभिषेक को हमारे जीवनों से नहीं खोना हैं। अगर हम ध्यान न देंगे और संभालकर नहीं रखेंगे तो वह केवल दे ही नहीं सकता लेकिन ले भी सकता है। अभिषेकित लोगों को कैसे रहना है यह लिखा गया है लैव्यव्यवस्था २१:१२ में – वह न पवित्रस्थान से बाहर निकले और न अपने परमेश्वर के पवित्रस्थान को अपवित्र ठहराए क्योंकि वह अलग किया गया है। उस पर उसके परमेश्वर के अभिषेक का तेल है। मैं यहोवा हूँ। प्रभु अभिषेक के मुकुट को देने के बाद उसका ध्यान बहुत से तरीकों से किए जाने चाहिए। हमारे प्राण के मुल्य में भी हमे उस वरदान जो प्रभु ने हमे दिया खोना नहीं चाहिए। हमे उनसे नहीं डरना हैं जो देह को नाश कर सकते हैं। उसके मंदिर को उसकी महिमा के लिए चमकना है। मंदिर को देखकर लोगों को परमेश्वर की महिमा करनी चाहिए। उसका चुना हुआ स्थान उसका मंदिर होना चाहिए और वह पवित्र होना चाहिए। उसके नज़रों से कुछ नहीं छिप सकता है। स्वर्ग में बैठे हुए वह पृथ्वी पर देखता है। वह धर्मी के निकट है और घमंड़ियों को दूर से ही जानता है। वह महिमा का राजा है। पौरानिक कालों में वह मंदिर में आता था और फिर उसकी उपस्थिति निकल भी जाती थी। आज वह हमारे साथ रहने कि इच्छा रखता है। इसलिए हमारा देह, हमारे विचार कैसे होने चाहिए आज। हमे अपने–आप को परखना हैं। हम पढ़ते हैं यूहन्ना १४:१६ – और मैं पिता से विनती करूँगा, और वह तुम्हें एक और सहायक देगा कि वह सदा तुम्हारे साथ रहे। नए नीयम में प्रभु आएगा और हमारे साथ रहेगा। प्रभु जिसने सारे संसार पर जय पाया और काटों का ताज सिर पर पहना उस क्रूस पर कहता है, वह प्रार्थना करेगा पिता से हमारे लिए, क्योंकि उसने हमारा सारा दण्ड क्रूस पर लिया है, हमे अभिषेक का मुकुट देने के लिए। और यह हमारे साथ हमेशा के लिए रहेगा। हमारा देह पवित्र आत्मा का मंदिर हैं। इस लिए हमे इस मंदिर को कैसे रखना हैं? क्या यह केवल हमारे शारिरिक देह को शुद्ध रखना है? हमे अपनी आत्मा प्राण और देह को पूर्ण तरह से हमारे प्रभु के हाथों में देना है। सारे बुरे विचारों, दुखी विचारों को छोड़कर परमेश्वर के वचन को हमारे हृदयों में रखकर। तब अभिषेक का मुकुट हमारे जीवनों में आनंद लाएगा। हम पढ़ते हैं प्रकाशितवाक्य २१:३ – तब मैंने सिंहासन से एक ऊंची आवाज़ को यह कहते सुना, ष्देखो, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है, वह उनके मध्य निवास

करेगा। वे उसके लोग होंगे तथा परमेश्वर स्वयं उनके मध्य रहेगा। प्रभु येशु के प्रार्थना करने के बाद अभिषेक का मुकुट हमारे साथ हमेशा रहेगा। प्रभु हमारे साथ हर परिस्थिति में रह सकता है। जब उसकी महिमा हमेशा हमारे साथ रहता है तब हमारे जीवन महिमा का वह जीवन बनेगा। हम पढ़ते हैं यशायाह ६२:३ – तू यहोवा के हाथ में एक शोभायमान मुकुट, हां, अपने परमेश्वर के हाथ में राजसी पगड़ी ठहरेगी। हमारा मुकुट कोई मामुली मुकुट नहीं। यह वैसा नहीं जैसा खिलाड़ी या ब्यूटी क्वीन को दिया जाता है। यह परमेश्वर के हाथ से आता हैं और इसे पाने के बाद हमारा जीवन बदल जाएगा। हमसे दुष्ट रास्ता निकल जाता है और हमारा जीवन नयासा हो जाता है परमेश्वर के लिए। पवित्र–शास्त्र कहता है इफिसियों २:१० – क्योंकि हम उसके हाथ की कारीगरी हैं, जो मसीह येशु में उन भले कार्यों के लिए सृजे गए हैं जिन्हें परमेश्वर ने प्रारम्भ ही से तैयार किया कि हम उन्हें करें। पृथ्वी के नीव से पहले उसकी योजना हमारे लिए दया और प्यार था। उसके योजनाओं को हमारे जीवनों में पूरा करने के लिए वह एक अच्छा कार्य करेगा। जब हम अभिषेक के मुकुट को पाते हैं, बुद्धि के मुकुट को, तो हमारा जीवन एक अच्छे कार्यों का जीवन बनता है। सारा दुष्ट, पाप, घटीपन और दुख हमारे जीवन से बाहर जाता है और हमारा जीवन एक बुद्धि का होता है। समय के आरंभ से प्रभु ने मनुष्य को बनाया उसी के रूप में और उसे बगीचे में रखा। परमेश्वर नहीं बदला और उसका प्यार भी नहीं बदला और उसके विचार नहीं बदले। यह उसके विचारों में है कि हम एक आनंदभरा जीवन जीए। इसलिए अभिषेक के मुकुट से हमे एक आनंद भरा जीवन जीना हैं। पवित्र शास्त्र कहता है यशायाह ४९:१६ में – देख, मैंने तेरा नाम अपनी हथेली पर खोद कर लिख लिया है; तेरी शहरपनाह निरन्तर मेरे सामने है। जब हम उसके हाथों में हैं तब प्रभु हमे नहीं भूलता हैं। वह हमे याद रखता है और प्यार करता है हमसे। पवित्र शास्त्र कहता है भजन संहिता १३७:५–६ – हे यरूशलेम, यदि मैं तुझे भूल जाऊं, तो मेरा दाहिना हाथ भी काम करना भूल जाए। यदि मैं तुझे स्मरण न रखूं यदि मैं यरूशलेम को अपने बड़े से बड़े आनंद से श्रेष्ठ न जानूं, तो मेरी जीभ मेरे तालू से चिपक जाए। प्रभु हमारे लिए हमेशा पिता से प्रार्थना करता है और हम हमेशा उसके विचारों में हैं। वह हमे कभी नहीं भूलता। जब तक हमे वह यह महिमा का मुकुट देता है, हमे उसके साथ बनके रहना हैं। जब तक वह एक कार्य हमारे जीवन में करता है हमे उस में बनके रहना है। प्रभु येशु पिता में एक था बहुत से वर्षों के लिए और बहुत से कठिनाइयों और निंदा का सामना किया जब तक पिता

ने उसका प्रयोग किया। हमे दुख, कठिनाइयों, निंदा और दुष्ट का सामना करना है लेकिन हमारे परमेश्वर को नहीं भूलना है। हमे शांति का मुकुट, अभिषेक का और बुद्धि का मुकुट देने के लिए प्रभु ने अपने ऊपर काटों का मुकुट लिया। जब हम उसके उपसिथिति में जाते हैं हमे विश्वास में तैयार होना हैं और शुद्ध होना हैं जैसे एस्तेर तैयार हुई और राजा के पास गई। वह आया हमे वह सब देने जिसकी हमे ज़रूरत हैं। आज भी वह हमे देगा और भविष्य में भी और हमे देते रहेगा। वह खज़ाने का भंड़ार है। हर दिन वह हमारी ओर उद्धार को नयासा करता है। इस लिए हर दिन एक छोटे बच्चे के जैसे हमे प्रभु के उपस्थिति में जाना है। फिर वह हमारे जीवनों में किसी भी वस्तु की घटी नहीं करेगा। जब तक प्रभु हमे उठाता है हमे उसके हाथों में बंधे रहना हैं। हम पढ़ते हैं यशायाह ५१:१६ – मैंने तेरे मुंह में अपने वचन डाले हैं और तुझे अपने हाथ की आड़ में छिपा रखा है कि आकाश को स्थिर करूं, पृथ्वी की नेव डालूं, और सिय्योन से कहूं, ष्तू मेरी प्रजा है।ष हमे हमारे जीवनों को उसके हाथों में देना है और उसके छाया में रहना हैं। जब हम उस पर विश्वास करते हैं और आगे बढ़ते हैं तब वह हमे उसके हाथों में छिपाता है जैसे दिया गया है कुलुस्सियों ३:३ – क्योंकि तुम तो मर चुके हो और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है। हम भजन संहिता ९१:१ भी पढ़ते हैं – जो परमप्रधान की शरण में वास करता है, वह सर्वशक्तिमान की छाया में ठिकाना पाएगा। जब हम प्रभु में बंधे रहते हैं तब हम हमारे स्वर्गीय पिता के छाया में आनंद पाएँगे। हमे हमेशा याद रखना हैं कि वह एक है जो हमारे लिए प्रार्थना करता है, एक है जो हमारे दुखों को उठाता हैं और एक जो पिता से बात करता है हमारी ओर से और वह है प्रभु येशु मसीह। हमे यें मुकुटों को जो धार्मिकता, बुद्धि और अभिषेक का हैं, प्रभु ने उसपर काटों का मुकुट लिए क्रूस पर। वह चाहता है कि हम सबके जीवनों में बुद्धि रहे। संसार देखना चाहिए और कहना चाहिए कि हम प्रभु के प्यारे बच्चें हैं और उसकी करूणा और आशीष हम पर महान हैं। यही प्रभु की इच्छा है। इसलिए जैसे एस्तेर राजा के पास आई, उसी प्रकार हमे अपनी आत्मा, प्राण और शरीर को शुद्ध करना है, तब हम उसके प्यार को बहुतायत से जान सकेंगे। हमारा परमेश्वर एक प्यारा परमेश्वर है और उस प्यार को हमारे तरफ़ दिखाया है। इसी लिए बिना किसी शक के हम पूर्ण रीति से विश्वास कर सकते हैं हमारे परमेश्वर पर क्योंकि यह वह है जो हमे इस संसार में पूरा प्यार कर सकता है। वह हमे उसकी बुद्धि और उसका आशीष दे सकता है क्योंकि वह एक भंड़ार है।

पास्टर सरोजा म.